पौधों और जड़ी-बूटियों पर लोगों की जागरूकता जरूरी

अमर उजाला ब्यूरो

धर्मशाला।

प्रदेश के लोग यहां पाई जाने वाले विभिन्न पौधों और जड़ी-बूटियों के प्रति जागरूक नहीं हैं। इन विभिन्न प्रजाति के पेड़-पौधों और जड़ी-बूटियों का ऑनलाइन रिसोर्स ऐप डेवलप करने की जरूरत है, ताकि इनके फोटो को इनकी जानकारी सहित ऐप में अपलोड किया जा सके। यह बात धर्मशाला में आयोजित बायोलॉजिकल डायवर्सिटी एक्ट 2002 पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में आईएचबीटी पालमुपर के डायरेक्टर डॉ. संजय कुमार ने कही। उन्होंने कहा कि पेड़-पौधों और जड़ी-बूटियों के फोटो ऐप में अपलोड किए जाएं। इसके अलावा जिन पौधों के नाम गलत या डाले ही नहीं गए हैं, उन्हें इनके ज्ञाता व्यक्ति सही नाम डाल सकेंगे। उन्होंने कहा कि जैव विविधता पर नजर रखने के लिए कैमरों की सहायता ली जा रही है, लेकिन बदलते परिदृश्य में ड्रोन कैमरों की मदद भी इसमें ली जा सकती है।

वहीं, कार्यशाला के दौरान सेवानिवृत्त पीसीसीएफ विनय टंडन ने कहा कि वर्तमान में पेड़-पौधों के नामों को सूचिबद्ध करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जंगलों में खत्म हो रहे पेड़-पौधों और जड़ी बूटियों का भी सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाने वाली जड़ी-बूटियों के बारे में अधिकतर महिलाएं जागरूक होती हैं, ऐसे में जब भी ब्लॉक स्तर पर गठित समितियों को ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं से विशेषकर चर्चा करनी चाहिए। कार्यशाला में जिला कांगड़ा, चंबा, ऊना हमीरपुर जिलों के डीएफओ और 40 वन्य प्राणी विभाग के अधिकारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

दुर्लभ जड़ी-बूटियों का ज्ञान होना जरूरी : सत्यार्थी

हिमाचल प्रदेश स्टेट बायोडायवर्सिटी बोर्ड के मेंबर सेक्रेटरी आईएफएस कुनाल सत्यार्थी ने कहा कि दुर्लभ जड़ी-बूटियां होती हैं, जिनका ज्ञान अधिकारियों को भी नहीं होता, ऐसे में इनकी जानकारी सभी को होना जरूरी है। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 17 लाख 70 हजार जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों का नामांकन हुआ है। सत्यार्थी के अनुसार जड़ी-बूटियों की पहचान के लिए व्हटसऐप ग्रुप बनाया जा सकता है। इससे जब भी वन विभाग जड़ी-बूटियों को पकड़ता है तो इसे ग्रुप में फोटो सहित डालकर इसकी जानकारी उपलब्ध करवा सकता है, ताकि भविष्य में इनकी जानकारी प्राप्त की जा सके।

जड़ी-बूटियों की जानकारी के लिए बने एप

धर्मशाला में लगाई कार्यशाला में आइएचबीटी निदेशक ने हर व्यक्ति को जानकारी देने का किया आह्वान

संवाद सहयोगी, धर्मशाला : प्रदेश में उगने वाले विशेष पौधों और जड़ी-बूटियों की जानकारी प्रदेश के ही लोगों को नहीं है। इसका कारण यह है कि इनसे संबंधित जानकारी देने के लिए कोई उचित व्यवस्था नहीं है। जड़ी-बूटियों की जानकारी हर व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए ऑनलाइन रिसोर्स एप बनाने की जरूरत है, ताकि हर व्यक्ति अपने मोबाइल पर ही इसके बारे में पूरी जानकारी पा सके।

यह बात धर्मशाला में आयोजित बायोलॉजिकल डायवर्सिटी एक्ट-2002 पर आयोजित एकदिवसीय कार्यशाला में आइएचबीटी पालमपुर के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने कही। उन्होंने कहा कि ऐसा एप बनाने की जरूरत है, जिसमें फोटो और जानकारी अपलोड की जाए। इसके अलावा यदि किसी व्यक्ति को एप में अपलोड की गई जड़ी-बूटी के बारे में अधिक जानकारी हो तो उसकी प्रतिक्रिया के लिए भी व्यवस्था होनी चाहिए। जैव विविधता पर नजर रखने के लिए कैमरों की सहायता ली जा रही है, लेकिन बदलते परिदृश्य में ड्रोन कैमरों की मदद भी इसमें ली जा सकती है। कार्यशाला के दौरान सेवानिवृत्त प्रिंसिपल चीफ कंजरवेटर फॉरेस्ट (पीसीसीएफ) विनय टंडन ने कहा कि वर्तमान में पेड़-पौधों के नामों को सूचीबद्ध करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जंगलों में खत्म हो रहे पेड़-पौधों और जड़ी-बूटियों का भी सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाने वाली जड़ी-बूटियों के बारे में अधिकतर महिलाएं जागरूक होती हैं। ऐसे में ब्लॉक स्तर पर गठित समितियों को ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं से विशेषकर चर्चा करनी चाहिए। हिमाचल प्रदेश जैव विविधता बोर्ड की कुनाल सत्यार्थी ने कहा कि दुर्लभ जड़ी-बूटियां होती हैं, जिनका ज्ञान अधिकारियों को भी नहीं होता। ऐसे में इनकी जानकारी सभी को होना जरूरी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 17 लाख 70 हजार जीव जंतुओं और पेड़-पौधों का नामांकन हुआ है।

कार्यशाला में जिला कांगड़ा, चंबा, ऊना व हमीरपुर जिलों के डीएफओ और 40 वन्य प्राणी विभाग के अधिकारी भी मौजूद रहे।

बायोलॉजिकल डायवर्सिटी एक्ट-2002 पर आयोजित कार्यशाला में उपस्थित वन विभाग के डीएफओ और अन्य ● जागरण

औषधीय पौधों की लिस्ट बनाना जरूरी

■ नगर संवाददाता, धर्मशाला

■ जैव विविधता अधिनियम पर कार्यशाला में उठा मुद्दा

■ जड़ी-बूटियों की पहचान के लिए बनाया जाना चाहिए व्हाट्सऐप ग्रुप

हिमाचल के वनों में पाए जाने वाले पेड़-पौधों के नामों को सूचिबद्ध करना आवश्यक है। जंगलों में खत्म हो रहे पेड़-पौधों व जड़ी-बूटियों का भी सर्वेक्षण किया जाना चाहिए। लुप्त हो रहे पौधों व जड़ी-बूटियों का आकलन कर रिपोर्ट तैयार करना आवश्यक है। विशेषकर औषधीय पौधों की सूची तैयार करना बेहद आवश्यक है। गुरुवार को धर्मशाला में जैव विविधता अधिनियम 2002 पर आयोजित कार्यशाला के शुभारंभ सत्र की अध्यक्षता करते हुए सेवानिवृत्त पीसीसीएफ विनय टंडन ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाने वाली जड़ी-बूटियों के बारे में अधिकतर महिलाएं जागरूक होती हैं, जिसके चलते ब्लॉक स्तर पर गठित समितियों को ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं से विशेषकर चर्चा करनी चाहिए। इस कार्यशाला के दौरान स्टेट बायोडायवर्सिटी बोर्ड के मेंबर सेक्रेटरी आईएफएस कुनाल सत्यार्थी ने कहा कि जड़ी-बूटियों की पहचान के लिए व्हाट्सऐप ग्रुप बनाया जा सकता है। इससे जब भी वन विभाग द्वारा जड़ी-बूटियां पकड़ी जाती हैं, तो ग्रुप में उनकी फोटो डालकर उसके संबंध में जानकारी हासिल की जा सके। कई ऐसी दुर्लभ जड़ी-बूटियां होती हैं, जिनका ज्ञान अधिकारियों को भी नहीं होता, ऐसे में इनकी जानकारी सभी को होना जरूरी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 17 लाख 70 हजार जीव-जंतुओं व पेड़-पौधों का नामांकन हुआ है। उन्होंने एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि विश्व की आठ फीसदी जैव विविधता भारत में पाई जाती है। इस एकदिवसीय कार्यशाला में आईएचबीटी पालमुपर के डायरेक्टर डा. संजय कुमार ने कहा कि जैव विविधता पर नजर रखने के लिए कैमरों की सहायता ली जा रही है। जैव विविधता बोर्ड के प्रदेश परियोजना समन्वयक डा. एमएल ठाकुर, बोर्ड की निदेशक व सदस्य सचिव अर्चना शर्मा, बोर्ड के पीएसओ के कायस्था, राष्ट्रीय जैव विविधिता प्राधिकरण चेन्नई के परियोजना प्रबंधक डा. ईश्वर पुजार, शोधकर्ता मृदु टंडन, बोर्ड के सीनियर साइंटिफिक प्रोफेशनल डा. पंकज शर्मा ने जैव विविधिता अधिनियम 2002 के लाभों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

दिव्य हिमाचल Fri, 08 September 201
epaper.divyahimachal.

बिना अनुमति नहीं होगा जड़ी-बूटियों का उपयोग

◆ एक्ट की अवहेलना करने पर विदेशी को पांच और भारतीय को होगी दो वर्ष की कैद

हिमाचल दस्तक। धर्मशाला

धर्मशाला में आयोजित कार्यशाला में बहुमूल्य जैवसंपदा पर की चर्चा।

धर्मशाला में बीरवार को प्रदेश वन विभाग के जैवविविधता के तहत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें दूसरे प्रदेशों में बेची जा रही हिमाचल की बहुमूल्य जैवसंपदा पर चिंतन किया गया। प्रदेश जैवविविधता बोर्ड के संयुक्त सचिव कुनाल सत्यार्थी ने बताया कि किस प्रकार से प्रदेश की बहुमूल्य जड़ी-बूटियों को बाहरी राज्यों मे बेचा जा रहा है और बाहरी राज्य इन जड़ी-बूटियों से प्राप्त लाभ को स्वयं ही रख लेते हैं। इन जड़ी-बूटियों का उपयोग अब सरकार की आज्ञा के बिना नहीं किया जाएगा। इस एक्ट की अवहेलना करने वाले को सजा का प्रावधान किया गया है। इसके तहत विदेशियों को 5 साल व 10 लाख का जुर्माना, वहीं भारतीय नागरिकों को अवहेलना करने पर 2 साल की कैद व 5 लाख के जुर्माने का प्रावधान है। जड़ी-बूटियों को संरक्षण देने के लिए हिमाचल में पंचायत स्तर पर कमेटियां गठित की जा रही हैं। जैवविविधता एक्ट 2002 के अंतर्गत इसको संरक्षण देने पंचायत स्तर में फॉरेस्ट गार्ड को सेक्रेटरी घोषित किया जाएगा। ब्लॉक स्तर पर रेंजर अधिकारी को इसकी कमान सौंपी गई है। जिला वन अधिकारी को नाडल अधिकारी के तौर पर नियुक्त किया गया है। सभी जिला वन अधिकारियों को चलान काटने का अधिकार दिया गया है। अब इन जड़ी-बूटियों का उपयोग करने से पहले अब जैवविविधता प्रौधोयोगिक बोर्ड को लिखित जौर पर सूचित करना पड़ेगा, तभी कोई भी कंपनी हिमाचल से इन वेश कीमती जड़ी-बूटियों को ले पाएगी। जड़ी-बूटियों से प्राप्त आर्थिक लाभ को जनता के साथ बांटना पड़ेगा और जैव प्राधौगिक बोर्ड इस पैसे को जड़ी-बूटियों के संरक्षण के लिए उपयोग करेगा। प्रदेश में यह एक्ट शुरू हो चुका है, जबकि कुछ कंपनियां इस एक्ट के तहत अपना पंजीकरण करवा चुकी हैं। कार्यशाला में हमीरपुर, कांगड़ा-चंबा, ऊना मंडल के सभी जिला वन अधिकारी तथा 10 जिला वन अधिकारी व 40 वन रेंजर अधिकारी, मुख्य अतिथि के तौर पर विनय टंडन पीसीसीएफ सेवानिवृत्त वन अधिकारी, डॉ. संजय कुमार, निदेशक आईएचबीटी पालमपुर, चन्नई से डॉ. ईश्वर पौजार सचिव राज्य जैवविविधता बोर्ड, कुनाल सत्यार्थी, डॉ. अर्चना, अनिल जोशी, डॉ. कौशल आदि मौजूद रहे।

शोध कार्य में 60 प्रतिशत तक साहित्यिक चोरी तो रद्द होगा पंजीकरण!

शिमला, 7 सितम्बर (अभिषेक) : अकादमिक शोध कार्य में साहित्यिक चोरी 60 प्रतिशत तक पाई गई तो उक्त शोधकर्त्ता का पंजीकरण तक रद्द हो सकता है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) ने साहित्यिक चोरी पर नकेल कसने के लिए जीरो टॉलरैंस नीति अपनाने का निर्णय लिया है ताकि शोध कार्यों में कट-पेस्ट की प्रथा को बंद किया जा सके। ऐसे में शोधकर्त्ता द्वारा शोध कार्य में साहित्यिक चोरी किए जाने को लेकर शोधकर्त्ता दोषी पाया जाता है तो वह किसी भी शोध कार्य को प्रकाशित नहीं कर पाएगा और उक्त शोधकर्त्ता किसी भी विद्यार्थी को गाइड नहीं कर पाएगा।

यू.जी.सी. ने साहित्यिक चोरी को रोकने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने प्रस्ताव तैयार किया है। उच्च शिक्षण संस्थानों में अकादमिक अखंडता और साहित्यिक चोरी की रोकथाम रैगुलेशन-2017 के नाम से तैयार किए गए इस ड्राफ्ट में साहित्यिक चोरी किए जाने पर सख्त कदम उठाए जाना प्रस्तावित किया गया है।

एकैडमिक शोध कार्य में साहित्यिक चोरी को रोकने के लिए तैयार किए गए ड्राफ्ट को लेकर 30 सितम्बर तक सुझाव मांगे हैं। सुझाव आने के बाद उन पर गौर करके ड्राफ्ट को फाइनल कर दिया जाएगा।

शिक्षण संस्थानों को एकैडमिक मिसकंडक्ट पैनल (ए.एम.पी.) गठित करने को भी कहा गया है ताकि साहित्यिक चोरी के आरोप लगने पर मामले की जांच की जा सके और उक्त पैनल जांच कर मामले की रिपोर्ट प्रेषित करे।

पंजाब केसरी ई-पेपर
Fri, 08 September 2017
epaper.punjabkesari.in//c/21957664

लो जनाब ! अब आलू करेगा मालामाल

टिशू कल्चर तकनीक से तैयार किया जाएगा बीज, होगा रोगमुक्त, हिमाचल सहित उत्तर प्रदेश व हरियाणा में भेजा जाएगा बीज

जागरण संवाददाता, पालमपुर : आलू की फसल को लगने वाले रोगों के कारण अब किसानों की मेहनत पर पानी नहीं फिरेगा। अब आलू बीज टिशू कल्चर तकनीक से तैयार किया जाएगा और यह रोगमुक्त होगा।

सीएसआइआर-आइएचबीटी (काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च-इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन बायो रिसोर्स टेक्नोलॉजी) ने टिशू कल्चर की तकनीक तैयार की है। इस तकनीक पर काम करने के लिए मैसर्ज धौलाधार बायोप्लांट के साथ समझौता किया है। इस तकनीक से आलू की किस्मों के रोगमुक्त पौधे तैयार हो सकेंगे। साथ ही उत्पादन भी काफी होगा। आमतौर पर किसानों को आलू की खेती के लिए जी3 और जी4 स्तर के बीजों की जरूरत होती है। यह स्तर जी2 से शुरू होते हैं और इसके लिए टिशू कल्चर तकनीक महत्वपूर्ण है। इस तकनीक से उच्च गुणवत्तायुक्त बीजों को प्राप्त किया जा सकता है।

सीएसआइआर-आइएचबीटी पालमपुर में बुधवार को टिशू कल्चर तकनीक पर समझौते के दौरान संस्थान के निदेशक व अन्य ● जागरण

क्या है टिशू कल्चर

टिशू कल्चर तकनीक से पहले लैब में पौधे के क्लोन तैयार किए जाते हैं और इन्हें छोटे-छोटे हिस्सों में बांटा जाता है। इसके बाद इन हिस्सों को प्रोटीनयुक्त पदार्थों में रखा जाता है। इससे पौधे बीमारियों से बचे रहते हैं।

नगरोटा, पठियार व मलां में होती है ज्यादा पैदावार

जिला कांगड़ा में नगरोटा बगवां, पठियार, मलां, हटवास व क्लथर में आलू की पैदावार भारी मात्रा में होती है। लाहुल स्पीति में भी आलू तैयार किया जाता है। लाहुल के आलू को ही अधिकतर किसान बीज के रूप में इस्तेमाल करते हैं। इस बार 50000 क्विंटल से अधिक की पैदावार कांगड़ा जिले में हुई थी।

क्या आती हैं दिक्कतें

जिले में कोल्ड स्टोर न होने से किसानों को आलू रखने में दिक्कतें आती हैं। लोगों फसल को घरों में रख लेते हैं, लेकिन इसमें बीमारी लगनी आरंभ हो जाती है। टिशू कल्चर से तैयार बीज रोगों से लड़ने में सक्षम होता है और तैयार फसल को अधिक समय तक रखा जा सकेगा।

धौलाधार बायोप्लांट से संदीप शर्मा व ललित ने कुछ दिन पूर्व संस्थान का दौरा किया था और यहां टिशू कल्चर से आलू उत्पादन तकनीक में रुचि दिखाई थी। इस समझौते से किसानों को अच्छी गुणवत्तायुक्त आलू के बीज प्राप्त हो सकेंगे और इन्हें लगाकर किसान बाजार में फसल का बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकेंगे। मै. धौलाधार बायोप्लांट इन बीजों को पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में सप्लाई करेगा।

पालमपुर : सी.एस.आई.आर. की प्लेटिनम जुबली पर आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी के अंतिम दिन बच्चों को विज्ञान की नई तकनीकों के बारे में जानकारी प्रदान की गई। इस दौरान संस्थान के डायरैक्टर डा. संजय कुमार व आई.एच.बी.टी. के प्रवक्ता डा. राकेश सूद के साथ स्कूली बच्चे। (गौरव)

पंजाब केसरी ई-पेपर
Thu, 24 August 2017
epaper.punjabkesari.in//c/21577882

सीख

सीएसआईआर के प्लेटिनम जुबली टेक्नोफेस्ट को देख विद्यार्थी प्रसन्न, प्रदर्शनी भी निहारी

अरे वाह! साइंस में तो बहुत संभावनाएं हैं

■ जयदीप रिहान, पालमपुर

अरे वाह! विज्ञान में तो बहुत संभावनाएं हैं। यह उन बच्चों का कहना है जो पालमपुर स्थित सीएसआईआर संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनी देखने पहुंच रहे हैं। सीएसआईआर संस्थान में आयोजित किए जा रहे प्लेटिनम जुबली टेक्नोफेस्ट में पहुंच रहे अनेक विद्यार्थियों ने विज्ञान के क्षेत्र में ही अपना भविष्य बनाने की बात कही है। यहीं से उनमें आगे जाकर साइंस में ही भविष्य की संभावनाएं तलाशने का विचार आया है। केंद्रीय विद्यालय पालमपुर की जमा दो की छात्रा रिया ने बताया कि सीएसआईआर में आयोजित की जा रही प्रदर्शनी में कुछ ऐसे रोचक विषय भी उनके सामने आए हैं, जिनके बारे में अब तक उनको कम ही पता था। स्मृति और खुशबू ने बताया कि टेक्नोफेस्ट में साइंस के विभिन्न पहलुओं पर काफी लाभदायक जानकारी उनको मिली है। तुशार, उद्भव और वरुण ने बताया कि अंतरिक्ष एवं स्ट्रेटेजिक सेक्टर की जानकारी उनको भविष्य में बहुत काम आएगी। तीन दिवसीय

प्रदर्शनी के दूसरे दिन राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला राजपुर, केवी होल्टा, विवेका फाउंडेशन भवारना, ग्रीन फील्ड नगरोटा, बतरा कालेज, जीएवी सल्याणा, गर्ल्ज स्कूल पालमपुर, जीजीडीएसडी कालेज राजपुर सहित करीब 12 शिक्षण संस्थानों के आठ सौ से अधिक बच्चों ने खाद्य एवं पोषण, कृषि एवं पुष्पखेती, जेनेरिक्स एवं स्वास्थ्य, रसायन एवं पेट्रोकेमिकल, बौद्धिक संपदा, ग्रामीण विकास, चर्म उद्योग सशक्तिकरण, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, पदार्थ, खनिज, खनन, ऊर्जा, मानव संपदा पोषण, इंजीनियरिंग एवं आधारभूत ढांचा, जल आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण जानकारी हासिल की। सीएसआईआर के निदेशक डा. संजय कुमार ने बताया कि सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं द्वारा विकसित वैज्ञानिक तकनीकी, प्रौद्योगिकी एवं उत्पाद के बारे में आम नागरिक विशेषकर छात्रों तक जानकारी पहुंचाई जा रही है।

ाला : 01892-222292 व्हाट्स ऐप 94180-48488 ई-मेल dharamshala@divyahimachal.com ■ नगरोटा बगवां 94185-41200 ■ पालमपुर 94186-09595 ■ बैजनाथ 94181-43001 ■ नगर 94180-79591 ■ देहरा

दिव्य हिमाचल Wed, 23 August 2017
epaper.divyahimachal.com//c/21550467

सीएसआइआर में विज्ञान का चमत्कार देख रहे विद्यार्थी

जागरण संवाददाता, पालमपुर : काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्री रिसर्च (सीएसआइआर) इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन बायोरिसोर्स टेक्नोलॉजी पालमपुर में 75वीं वर्षगांठ पर राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का शुभारंभ सोमवार को हुआ।

23 अगस्त तक चलने वाली इस प्रदर्शनी में देश भर में सीएसआइआर के स्थित संस्थानों में हुए शोध कार्यों के बारे में विद्यार्थियों को अवगत करवाया जाएगा। सोमवार को आरंभ हुई इस विज्ञान प्रदर्शनी में विभिन्न स्कूलों के लगभग हजार बच्चों ने विज्ञान की नई तकनीकों की जानकारी हासिल की। सीएसआइआर पालमपुर के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आरके सूद ने कहा 14 विभिन्न विषयों की प्रदर्शनी लगाई गई है। इस प्रदर्शनी के माध्यम से सीएसआइआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं की ओर से विकसित वैज्ञानिक तकनीकी, प्रौद्योगिकी एवं उत्पाद के बारे में आम नागरिक को जानकारी दी जा रही है। प्रदर्शनी में विज्ञान के विभिन क्षेत्रों में सीएसआइआर की उपलब्धियां दर्शाई गई हैं। टेक्नोफेस्ट मुख्य विषयों जैसे अंतरिक्ष एवं स्ट्रैटेजिक सेक्टर, खाद्य एवं पोषण, कृषि एवं पुष्पखेती, जेनेरिक्स एवं स्वास्थ्य, रसायन एवं पेट्रोकेमिकल, बौद्धिक संपदा, ग्रामीण विकास, चर्म उद्योग सशक्तीकरण, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, पदार्थ, खनिज, खनन, ऊर्जा, मानव संपदा पोषण, इंजीनियरिंग एवं आधारभूत ढांचा व जल पर प्रर्दशनी लगाइ गई है।

आइएचबीटी में आयोजित प्रदर्शनी में जानकारी हासिल करते विद्यार्थी ● जागरण

सरकारी स्कूलों के लिए बसों का प्रबंध

इस प्रदर्शनी में निजी स्कूलों के साथ सरकारी स्कूलों के बच्चे भी पहुंचे। इसके लिए सीएसआइआर की ओर से विशेष तौर बसों का प्रबंधन किया गया है। ये बसें स्कूलों से बच्चों को लाकर वापस स्कूलों में ही पहुंचा रही हैं। डॉ. सूद ने बताया कि हमारा मकसद है कि कोई भी बच्चा नई तकनीकों की जानकारी से वंचित न रहे। इसके लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है।

http://epaper.jagran.com/ePaperArticle/22-aug-2017-edition-Kangra-page_14-24542-7030-102.html

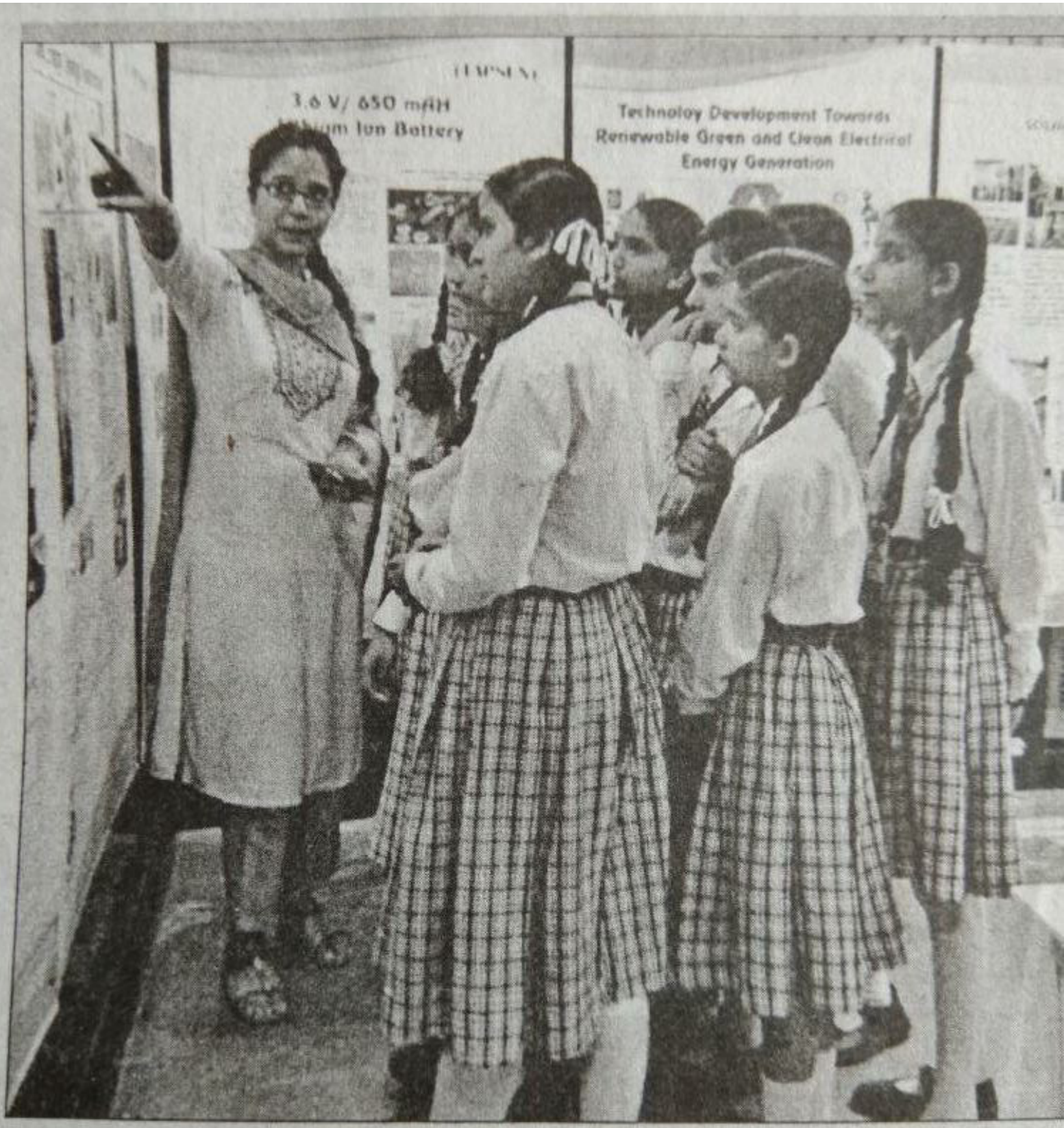

पालमपुर. सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर में लगी तीन दिवसीय वैज्ञानिक विषयों की प्रदर्शनी में जानकारी लेते स्कूली बच्चे।

छात्रों ने जानीं विज्ञान की बारीकियां

पालमपुर सीएसआईआर संस्थान में प्लेटिनम जुबली टेक्नोफेस्ट का आगाज

■ कार्यालय संवाददाता, पालमपुर

■ राष्ट्रीय प्रदर्शनी के पहले दिन पहुंचे 500 से अधिक विद्यार्थी

पालमपुर स्थित सीएसआईआर संस्थान में तीन राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनी का आगाज सोमवार को हुआ। पहले ही दिन विभिन्न शिक्षण संस्थानों के करीब पांच सौ से अधिक बच्चों ने सीएसआईआर पहुंच कर विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी प्राप्त की। सीएसआईआर (वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद) इस वर्ष अपनी 75वीं वर्षगांठ यानी प्लेटिनम जयंती वर्ष मना रही है और इस सिलसिले में आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की कड़ी में पालमपुर स्थित सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान में प्लेटिनेम जुबली टेक्नोफेस्ट का आयोजन 21 से 23 अगस्त तक किया जा रहा है। प्रदर्शनी में युवाओं को अंतरिक्ष एवं स्ट्रेटेजिक सेक्टर, खाद्य एवं पोषण, कृषि एवं पुष्पखेती, जेनेरिक्स एवं स्वास्थ्य, रसायन एवं पेट्रोकेमिकल, बौद्धिक संपदा, ग्रामीण विकास, चर्म उद्योग सशक्तिकरण, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, पदार्थ, खनिज, खनन, ऊर्जा, मानव संपदा पोषण, इंजीनियरिंग एवं आधारभूत ढांचा व जल आदि विषयों पर अपनी जिज्ञासा शांत करने का अवसर मिल रहा है। प्रदर्शनी में विज्ञान के क्षेत्र में विभिन पहलुओं जैसे समुद्री से लेकर अंतरिक्ष विज्ञान तक, ट्रैक्टर से लेकर हवाई जहाज निर्माण तक, कृषि से लेकर जैव प्रौद्योगिकी, सगंध से औषध विकास तक, जल से जलवायु परिवर्तन व अन्य क्षेत्रों में सीएसआईआर की उपलब्धियां भी दर्शाई गई हैं, जो कि विद्यार्थियों को खूब आकर्षित कर रही हैं। सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं द्वारा विकसित वैज्ञानिक तकनीकी, प्रौद्योगिकी एवं उत्पाद के बारे में आम नागरिक विशेषकर छात्रों तक जानकारी पहुंचाई जा रही है। साथ ही छात्रों की विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाए जाने का प्रयास भी इसके माध्यम से किया जा रहा है।

दिव्य हिमाचल, कांगड़ा, पृ 2, 22 अगस्त 2017 (http://epaper.divyahimachal.com/1328170/Mera-kangra/Mera-Kangra#page/2/2

आईएचबीटी में जिज्ञासा कार्यक्रम

पालमपुर। सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में 10 से लेकर 14 जुलाई तक जिज्ञासा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. संजय कुमार, निदेशक आईएचबीटी ने किया। केंद्रीय विद्यालय के प्रधानाचार्य ललित कुमार ने छात्रों को संबोधित किया। प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डॉ. ओपी शर्मा ने मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में 11वीं कक्षा के विद्यार्थी जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, प्राकृतिक उत्पाद और सिंथेटिक रसायन शास्त्र के क्षेत्र में, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त वनस्पति संग्रहालय, सुदूर संवेदन और मानचित्रण सुविधाएं, निर्मल हाउस सुविधा आदि प्रयोगशालाओं का भ्रमण करेंगे। वैज्ञानिकों द्वारा स्कूल स्तर के विशेष प्रयोगों को डिजाइन किया गया है, ताकि बच्चों को नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक और वैज्ञानिक उपकरणों के लिए प्रशिक्षण दिया जा सके।

वैज्ञानिकों से टिप्स लेंगे विद्यार्थी

औद्योगिक अनुसंधान परिषद और केंद्रीय विद्यालय संगठन में समझौता

■ जयदीप रिहान, पालमपुर

औद्योगिक अनुसंधान परिषद और केंद्रीय विद्यालय संगठन के बीच हुए एक समझौते के तहत सीएसआईआर-आईएचबीटी जिज्ञासा कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। जिज्ञासा की पहल सीएसआईआर द्वारा प्लेटिनम जुबली समारोह के एक भाग के रूप में हुई। हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान में दस से 14 जुलाई तक जिज्ञासा कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

जिज्ञासा छात्रों-वैज्ञानिकों का परस्पर संपर्क कार्यक्रम है, जिस पर वैज्ञानिक, औद्योगिक अनुसंधान परिषद तथा केंद्रीय विद्यालय संगठन के बीच इसी साल छह जुलाई को एक समझौता हुआ था। पालमपुर स्थित संस्थान में कार्यक्रम का शुभारंभ सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक डा. संजय कुमार ने किया।

सप्ताह तक चलने वाले इस कार्यक्रम में 11वीं कक्षा के छात्रों को जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, प्राकृतिक उत्पाद और सिंथेटिक रसायन शास्त्र के क्षेत्र में, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त वनस्पति संग्रहालय, सुदूर संवेदन और मानचित्रण सुविधाएं, निमल हाउस सुविधा, न्यूट्रास्यूटिक्ल के लिए पायलट प्लांट, सगंध तेल और हर्बल निष्कर्षण जैसी अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं का भ्रमण करवाया जाएगा।

कार्यक्रम में शामिल किए मॉडल

छात्रों को आवासीय कार्यक्रम, वैज्ञानिक एक शिक्षक और शिक्षक एक वैज्ञानिक में, प्रयोगशाला गतिविधियां और ऑनसाइट परीक्षण, वैज्ञानिकों द्वारा स्कूलों का दौरा, विज्ञान और गणित क्लब, व्याख्यान श्रृंखला, छात्रों को शिक्षुता कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनियां, शिक्षक कार्यशाला, टिंकरिंग लैबोरेटरीज, राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की परियोजनाएं

> जिज्ञासा कार्यक्रम के अंतर्गत सीएसआईआर-आईएचबीटी विद्यार्थियों में नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों, हैंड ऑन ट्रेनिंग, प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के व्याख्यानों से वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना है। छात्रों को नवोन्मेषी परियोजनाओं को लेने और अपनी प्रतिभा को पूरा करने के लिए विज्ञान को एक करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा
>
> डा संजय कुमार
> निदेशक, सीएसआईआर

पहल विद्यार्थी 14 जुलाई तक सीखेंगे वैज्ञानिक तजुर्वे, प्रयोगशालाओं का करेंगे भ्रमण, शुभारंभ पर सीएसआइआर निदेशक रहे मुख्यातिथि

आइएचबीटी पालमपुर में जिज्ञासा कार्यक्रम का शुभारंभ

संवाद सहयोगी, पालमपुर : हिमालय जैवसंपदा प्रोद्यौगिकी संस्थान (आइएचबीटी) में सोमवार से 14 जुलाई तक जिज्ञासा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जिज्ञासा छात्रों व वैज्ञानिकों का परस्पर संपर्क कार्यक्रम है। यह वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद और केंद्रीय विद्यालय संगठन में छह जुलाई को एक समझौते के तहत आयोजित किया जा रहा है। जिज्ञासा की पहल सीएसआइआर-आइएचबीटी की ओर से प्लेटिनम जुबली समारोह के एक भाग के रूप में हुई है। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के लिए आवासीय कार्यक्रम, वैज्ञानिक एक शिक्षक और शिक्षक एक वैज्ञानिक के रूप में, प्रयोगशाला गतिविधियां और ऑनसाइट परीक्षण, वैज्ञानिकों की ओर से स्कूल का दौरा, विज्ञान और गणित क्लब, व्याख्यानमाला, छात्रों के लिए शिक्षा कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनियां, शिक्षक कार्यशाला, टिंकरिंग लेबोरेट्रीज व राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की परियोजनाएं आदि शामिल हैं। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान निदेशक डॉ. संजय कुमार ने किया जबकि केंद्रीय विद्यालय पालमपुर के प्रधानाचार्य ललित कुमार विशेष तौर से शामिल रहे। कार्यक्रम में वैज्ञानिक डॉ. ओपी शर्मा ने मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया। मुख्य अतिथि निदेशक डॉ. संजय कुमार ने बताया कि सप्ताह तक चलने वाले इस कार्यक्रम में 11वीं कक्षा के छात्रों को जैव प्रौद्योगिकी, जैव सूचना विज्ञान, प्राकृतिक उत्पाद और सिंथेटिक रसायन शास्त्र के क्षेत्र, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त वनस्पति संग्रहालय, सुदूर संवेदन और मानचित्रण सुविधाएं, एनिमल हाउस सुविधा, न्यूट्रास्यूटिकल के लिए पायलट प्लांट, सुगंधित तेल और हर्बल निष्कर्षण जैसी अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं का भ्रमण करवाया जाएगा।

आइएचबीटी पालमपुर में आयोजित जिज्ञासा कार्यक्रम में भाग लेते विद्यार्थी ● जागरण

स्कूल स्तर के विशेष प्रयोग होंगे डिजाइन

संस्थान के वैज्ञानिकों की ओर से स्कूल स्तर के विशेष प्रयोगों को डिजाइन किया जाएगा, ताकि बच्चों को नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक और वैज्ञानिक उपकरणों के कामकाज करने के लिए प्रशिक्षण दिया जा सके। इसका उद्देश्य छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करना है।

जिज्ञासा पैदा करेगी वैज्ञानिक दृष्टिकोण

जिज्ञासा कार्यक्रम के अंतर्गत आइएचबीटी विद्यार्थियों में नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों, हैंड ऑन ट्रेनिंग, प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के व्याख्यानों से वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करेगा। छात्रों को नवोन्मेषी परियोजनाओं को लेने और विज्ञान को करियर के रूप में अपनाने के लिए भी प्रेरित किया जाएगा।

सी.एस.आई.आर. में जिज्ञासा कार्यक्रम शुरू

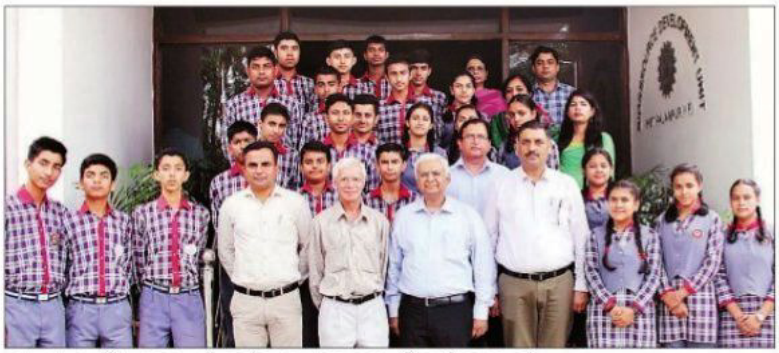

पालमपुर : जिज्ञासा कार्यक्रम के अवसर पर स्कूली बच्चे व अन्य। (स.ह.)

पालमपुर, 10 जुलाई (स.ह.): सी.एस.आई.आर. हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान में 10-14 जुलाई तक जिज्ञासा कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। जिज्ञासा छात्रों-वैज्ञानिकों का परस्पर संपर्क कार्यक्रम है जिस पर वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद और केंद्रीय विद्यालय संगठन में 6 जुलाई को एक समझौता हुआ था। इस कार्यक्रम में छात्रों के लिए आवासीय कार्यक्रम, वैज्ञानिक एक शिक्षक और शिक्षक एक वैज्ञानिक के रूप में, प्रयोगशाला गतिविधियां और ऑनसाइट परीक्षण, वैज्ञानिकों द्वारा स्कूलों का दौरा, विज्ञान और गणित क्लब व्याख्यान शृंखला, छात्रों के लिए शिक्षुता कार्यक्रम, विज्ञान प्रदर्शनियां, शिक्षक कार्यशाला, टिंकरिंग लैबोरेटरीज व राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस की परियोजनाएं मॉडल शामिल हुए। कार्यक्रम का शुभारम्भ डा. संजय कुमार निदेशक, सी.एस.आई.आर.-आई.एच.बी.टी. ने किया। ललित कुमार प्रधानाचार्य केंद्रीय विद्यालय होल्टा ने भी छात्रों को संबोधित किया। प्रतिष्ठित वैज्ञानिक डा. ओ.पी. शर्मा ने मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान दिया। छात्रों को नवोन्मेषी परियोजनाओं को लेने और अपनी प्रतिभा को पूरा करने के लिए विज्ञान को एक करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा।

पंजाब केसरी ई-पेपर
Tue, 11 July 2017
epaper.punjabkesari.in//c/20448589

आवराय-अमन प्रथम और अनमोल-इशान द्वितीय रहे।

पालमपुर में जिज्ञासा कार्यक्रम 14 जुलाई तक

पालमपुर (कांगड़ा)। सीएसआईआर-हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में 10 से 14 जुलाई तक जिज्ञासा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जिज्ञासा छात्रों-वैज्ञानिकों का परस्पर संपर्क कार्यक्रम है। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद और केंद्रीय विद्यालय संगठन में 6 जुलाई 2017 को इस संदर्भ में समझौता हुआ था। जिज्ञासा की पहल सीएसआईआर की ओर से प्लेटिनम जुबली समारोह के एक भाग के रूप में हुई थी। इसमें छात्रों के लिए आवासीय कार्यक्रम, वैज्ञानिक एक शिक्षक और शिक्षक एक वैज्ञानिक के रूप में, प्रयोगशाला गतिविधियां और ऑनसाइट परीक्षण, वैज्ञानिकों की ओर से स्कूलों का दौरा, विज्ञान और गणित क्लब समेत कई कार्यक्रम होंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार ने किया। केंद्रीय विद्यालय होल्टा के प्रधानाचार्य ललित कुमार छात्रों को संबोधित किया।

IHBT signs pact to extract catechins from tea leaves

OUR CORRESPONDENT

PALAMPUR, JULY 3

The CSIR-IHBT has signed an agreement with INDCOSERVE (The Tamil Nadu Small Tea Growers Industrial Cooperative Tea Factories Federation Ltd. at Coonoor, Nilgiris, Tamil Nadu), for transfer of technology for extraction of catechins from tea leaves.

Catechins are high value antioxidants having numerous health benefits. For extraction of one kg catechins, 40-50 kg fresh tea leaves are required and its price in international market is Rs 12,000-15,000. Catechins are 7-9 times more beneficial compared to commercial tea production.

INDCOSERVE has 16 industrial cooperative tea factories under regular production, catering to an area of 36,327 acres of 25,115 small tea growers with the main object to transform their socio-economic conditions. Currently commercial tea processing in the region has been adversely affected due to poor marketing.

The establishment of this enterprise will boost the economy of farmers involved in tea plantation. The CSIR-IHBT technology of catechins production is a green and sustainable process.

The Tribune (Himachal Edition) Tue, 04 July 2017
epaper.tribuneindia.com//c/20272629

सीएसआइआर का हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान तैयार करेगा कैप्सूल

अब चाय दूर करेगी मोटापा

मुकेश मेहरा ● पालमपुर

तमिलनाडु की कंपनी के साथ किया समझौता, चाय पत्ती में पाया जाने वाला एंटीऑक्सीडेंट कई बीमारियों के इलाज में है सहायक

लोगों की मनपसंद चाय अब मोटापा कम करने में भी सहायक सिद्ध होगी। जी हां! इसे साकार किया है पालमपुर स्थित काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआइआर) के हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (आइएचबीटी) ने। संस्थान चाय पत्ती में पाए जाने वाले केटेकिन पोषक तत्व को निकालकर उसके कैप्सूल बनाएगा और यह देशभर के बाजारों में उपलब्ध होंगे। इसके लिए संस्थान ने तमिलनाडु की एक कंपनी के साथ समझौता किया है। चाय पत्ती में पाया जाने वाला केटेकिन उच्च गुणवत्तापूर्ण एंटीऑक्सीडेंट होता है और ये कई बीमारियों का इलाज करने में कारगर है। हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान ने चाय पत्ती से केटेकिन निकालने के लिए इंडकोसर्व स्माल टी ग्रोअर इंडस्ट्रियल को-ऑपरेटिव टी फैक्ट्री फेडरेशन लिमिटेड कुन्नूर तमिलनाडु से

समझौता किया है। संस्थान अपनी शोध और तकनीक के जरिये कंपनी में चाय पत्ती से केटेकिन को निकालकर उसका पाउडर बनाएगा और बाद में मोटापा कम करने वाले कैप्सूल तैयार किए जाएंगे।

हिमाचल में चाय उत्पादन

हिमाचल में 2300 हेक्टेयर में चाय उत्पादन होता है। 2100 हेक्टेयर कांगड़ा, 200 मंडी तो चंबा में मात्र छह हेक्टेयर क्षेत्र में चाय की खेती की जाती है।

300 मिलीग्राम का एक कैप्सूल 15 से 20 रुपये में

एंटीऑक्सीडेंट से बनने वाले कैप्सूल की मात्रा 300 मिलीग्राम तक रहती है और बाजार में इसकी कीमत 15 से 20 रुपये तक होती है। विशेषज्ञों की मानें तो अंतरराष्ट्रीय बाजार में 60 कैप्सूल का रेट 960 रुपये भारतीय करंसी के अनुसार है। तमिलनाडु में हिमालयन जैव प्रौद्योगिकी के सहयोग से तैयार होने वाले इन कैप्सूल की मार्केटिंग की भी संबंधित कंपनी ही करेगी।

एक किलो केटेकिन के लिए 50 किलो चाय पत्तियों की जरूरत

एक किलोग्राम केटेकिन को निकालने के लिए 50 किलोग्राम चाय पत्ती की आवश्यकता होती है और इसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में 12000 से 15000 रुपये कीमत है। चाय उत्पादन की बजाय केटेकिन उत्पादन सात से नौ गुणा लाभकारी है। मै. इंडकोसर्व के 16 सहकारी चाय कारखाने हैं और यह 25115 लघु चाय उत्पादकों की 36327 एकड़ क्षेत्र की जरूरत को पूरा कर रहा है। हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक संजय कुमार ने बताया कि केटेकिन निकालने की विधि से चाय उत्पादकों को अच्छे दाम मिलेंगे।

एंटीऑक्सीडेंट मोटापा कम करने में सहायक

विशेषज्ञों की मानें तो चाय पत्ती में पाए जाने वाले केटेकिन के एंटीऑक्सीडेंट मोटापे को कम करने और त्वचा निखारने के लिए काफी सहायक होते हैं। साथ ही कैंसर की रोकथाम में भी इन एंटीऑक्सीडेंट का प्रयोग होता है। यही नहीं शरीर में होने वाले छोटे-मोटे विकारों से भी यह निजात दिलाता है।

तमिलनाडु के चाय उत्पादकों के लिए संजीवनी बनेगी 'टी-केटेकिन'

आई.एच.बी.टी. व इंडकोसर्व तमिलनाडु में चाय केटेकिन उत्पादन हेतु समझौता

पालमपुर, 1 जुलाई (स.ह.): विपणन समस्याओं से जूझ रहे तमिलनाडु के चाय उत्पादकों के लिए हिमालय जैव प्रौद्योगिकी संस्थान की टी-केटेकिन तकनीक संजीवनी बनने जा रही है। हिमालय जैव प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर (सी.एस.आई. आर.) पालमपुर ने तमिलनाडु स्माल टी ग्रोअर इंडस्ट्रियल को-अप्रेटिव टी फैक्टरी फैडरेशन लि. कुन्नूर, नीलगिरी, तमिलनाडु (इंडकोसर्व) के साथ चाय की पत्तियों से केटेकिन के निष्कर्षण की प्रौद्योगिकी को हस्तांतरित करने के लिए समझौता किया। हिमालय जैव प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर (सी.एस.आई. आर.)की केटेकिन उत्पादन प्रौद्योगिकी एक हरित और स्थायी प्रक्रिया पर आधारित है। केटेकिन एक उच्च गुणवत्तायुक्त एंटीऑक्सीडैंट है, जिसके कई स्वास्थ्यवर्धक लाभ हैं। एक किलोग्राम केटेकिन को निकालने के लिए 40-50 किलोग्राम ताजी चाय पत्तियों की आवश्यकता होती है और इसका अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मूल्य 12,000 से 15,000 रुपए है। विशेषज्ञों अनुसार चाय उत्पादन की अपेक्षा केटेकिन उत्पादन 7 से 9 गुणा लाभकारी है। एक आकलन के अनुसार चाय केटेकिन का वैश्विक बाजार 200 मीलियन डालर है तथा वर्ष 2020 तक इसकी मांग 7.4 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी। विदित रहे कि नियमित उत्पादन के लिए तमिलनाडु स्माल टी ग्रोअर इंडस्ट्रियल को-अप्रेटिव टी फैक्टरी फैडरेशन लि. कुन्नूर, नीलगिरी, तमिलनाडु (इंडकोसर्व) के 16 सहकारी चाय कारखाने हैं जो 25,115 लघु चाय उत्पादकों के 36,327 एकड़ क्षेत्र की आवश्यकता को पूरा कर रहा है। जिसका उद्देश्य उनका सामाजिक आर्थिक उत्थान करना है। इस उद्यम की स्थापना से तमिलनाडु के कुन्नूर क्षेत्र के चाय की खेती में लगे किसानों की आर्थिकी को सुधारने में सहायता मिलेगी। वर्तमान में विपणन समस्याओं के कारण इस क्षेत्र में चाय की प्रोसैसिंग प्रभावित हुई है जिसका सीधा प्रभाव लघु चाय उत्पादकों की आर्थिकी पर पड़ा है।

पालमपुर : हिमालय जैव प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर (सी.एस.आई.आर.) के निदेशक डा. संजय व (इंडकोसर्व के प्रबंध निदेशक अंबुज शर्मा समझौता पत्र हस्ताक्षरित कर आदान प्रदान करते हुए। (स.ह.)

पंजाब केसरी ई-पेपर
Sun, 02 July 2017
epaper.punjabkesari.in//c/20272877

केटेकिन प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण पर समझौता

सीएसआईआर और तमिलनाडु की चाय कंपनी इंडकोसर्व के बीच एमओयू साइन

अमर उजाला ब्यूरो

पालमपुर (कांगड़ा)।

चाय पत्तियों की केटेकिन को लेकर सी ए स आ ई आ र - आ ई ए च बी टी पालमपुर और तमिलनाडु की एक सहकारी चाय कंपनी के साथ समझौता हुआ है।

दोनों संस्थानों की बीच हुए समझौते से तमिलनाडु में चाय की खेती में जुटे किसानों की आर्थिकी सुधारने में मदद मिलेगी। यह समझौता सीएसआईआर और मैसर्ज इंडकोसर्व तमिलनाडु स्माल टी ग्रोअर इंडस्ट्रियल को-ऑपरेटिव टी फैक्टरी फेडरेशन लिमिटेड कुन्नूर, नीलगिरी, तमिलनाडु के साथ हुआ है। इसमें चाय की पत्तियों से केटेकिन के निष्कषर्ण की प्रौद्योगिकी को हस्तांतरित किया जाएगा। सीएसआईआर के चाय विशेषज्ञ डॉ. आरके सूद ने बताया कि केटेकिन एक उच्च गुणवत्तायुक्त एंटी ऑक्सीडेंट है। इसके कई स्वास्थ्यवर्धक लाभ हैं। एक किलोग्राम केटेकिन को निकालने के लिए 40-50 किलोग्राम ताजी चाय पत्तियों की आवश्यकता होती है, जबकि इसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में 12,000 से 15,000 रुपये कीमत है। चाय उत्पादन की अपेक्षा केटेकिन उत्पादन सात से नौ गुणा लाभकारी है।

स्वास्थ्य के लिए बेहतर माना जाता है केटेकिन

एक आकलन के अनुसार चाय केटेकिन का वैश्विक बाजार 200 मिलियन डालर है। वर्ष 2020 तक इसकी मांग 7.4 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी। नियमित उत्पादन के लिए मैसर्ज इंडकोसर्व के 16 सहकारी चाय कारखाने हैं, जो 25,115 लघु चाय उत्पादकों के 36,327 एकड़ क्षेत्र की आवश्यकता को पूरा कर रहे हैं। इसका उद्देश्य उनका सामाजिक आर्थिक उत्थान करना है। इस उद्यम की स्थापना से तमिलनाडु के कुन्नूर क्षेत्र में चाय की खेती में लगे किसानों की आर्थिकी को सुधारने में सहायता मिलेगी। सी ए स आ ई आ र - आ ई ए च बी टी पालमपुर की केटेकिन उत्पादन प्रौद्योगिकी एक हरित और स्थायी प्रक्रिया पर आधारित है।

पालमपुर में शनिवार को आईएचबीटी और तमिलनाडु की कंपनी के बीच कांगड़ा चाय को लेकर एमओयू साइन करते अधिकारी।

तमिलनाडू की आर्थिकी सुधारेगा सीएसआईआर

- कार्यालय संवाददाता, पालमपुर

- कुन्नूर के चाय उद्योग के लिए संस्थान का इंड्कोसर्व के साथ हुआ समझौता
- कैटेकिन उत्पादन के लिए होगी कसरत, चाय की पत्तियों से होगा निष्कर्षण

दक्षिण भारत के राज्य तमिलनाडू के कुन्नूर क्षेत्र के चाय की खेती में लगे किसानों की आर्थिकी सुधारने के लिए पालमपुर स्थित हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान ने हाथ बढ़ाया है। जानकारी के अनुसार सही मार्केटिंग के अभाव में इस क्षेत्र का चाय उद्योग संकट में चल रहा है। इस कड़ी में सीएसआईआर-आईएचबीटी संस्थान ने मै. इंड्कोसर्व (तमिलनाडू स्माल टी ग्रोअर इंडस्ट्रियल को-आपरेटिव टी फैक्टरी फेडरेशन लि. कुन्नूर, नीलगिरी, तामिलनाडू के साथ चाय की पत्तियों से कैटेकिन के निष्कर्षण की प्रौद्योगिकी को हस्तांतरित करने के लिए समझौता किया। जानकारी के अनुसार कैटेकिन एक उच्च गुणवत्तायुक्त एंटीऑक्सीडेंट है, जिसके कई स्वास्थ्यवर्द्धक लाभ हैं। एक किलोग्राम कैटेकिन को निकालने के लिए 40-50 किलोग्राम ताजी चाय पत्तियों की आवश्यकता होती है और अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारी मांग के चलते इसकी कीमत 12 से 15 हजार रुपए प्रति किलो मिल जाती है। चाय

> सीएसआईआर-आईएचबीटी संस्थान ने तमिलनाडू के इंड्कोसर्व के साथ कैटेकिन उत्पादन के लिए समझौता किया है। इस उद्यम की स्थापना से तामिलनाडू के कुन्नूर क्षेत्र के चाय की खेती में लगे किसानों की आर्थिकी को सुधारने में सहायता मिलेगी
>
> **डा. संजय कुमार**
> **निदेशक, सीएसआईआर**

उत्पादन की अपेक्षा कैटेकिन उत्पादन सात से नौ गुना लाभकारी है। एक आकलन के अनुसार चाय कैटेकिन का वैश्विक बाजार दो सौ मीलियन डालर है तथा वर्ष 2020 तक इसकी मांग 7.4 प्रतिशत की दर से बढ़ेगी। नियमित उत्पादन के लिए मै. इंडकोसर्व के 16 सहकारी चाय कारखाने हैं, जो 25115 लघु चाय उत्पादकों के 36327 एकड़ क्षेत्र की आवश्यकता को पूरा कर रहा है, जिसका उद्देश्य उनका सामाजिक आर्थिक उत्थान करना है।

चीन-जापान सबसे बड़े सप्लायर

विश्वभर में अब तक कैटेकिन की मार्केट दस प्रतिशत के करीब है और इसमें से भी 75 फीसदी तक चीन और जापान सबसे बड़े सप्लायर हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजार में चाय से बने कैटेकिन्स की मांग लगातार बढ़ रही है और सीएसआईआर के वैज्ञानिकों की तकनीक काफी लाभदायक साबित होने जा रही है। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि कैटेकिन्स निकालने की तकनीक से चाय उद्योग को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

6 महीने फ्रेश रहेगी 'कांगड़ी धाम'

डिब्बा बंद राजमाह का मदरा; चने का खट्टा-रायता व उड़द कई दिन तक रहेंगे महफूज

■ कार्यालय संवाददाता, पालमपुर

हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किए गए डिब्बाबंद कांगड़ी धाम के व्यंजन अब बाजार में उपलब्ध हो रहे हैं। सीएसआईआर संस्थान ने बैजनाथ स्थित निजी कंपनी के साथ एक समझौते के तहत तकनीक का हस्तांतरण किया था और कंपनी ने यह व्यंजन तैयार करने शुरू कर दिए हैं। 'रेडी-टू-ईट' कांगड़ी धाम के प्रमुख व्यंजनों को अब अलग-अलग स्थानों तथा लोगों के घरों तक पहुंचाने की तैयारी की है असीम एंटरप्राइजेज ने। पालमपुर के करीब घुग्गर पंचायत में संतोषी माता मंदिर

के पास 'असीम एंटरप्राइजेज' ने काम करना शुरू कर दिया है। यहां पर कुछ अन्य उत्पादों के साथ प्रमुख तौर से कांगड़ी धाम के डिब्बाबंद पैक उपलब्ध करवाए जाएंगे। सीएसआईआर संस्थान ने कुछ समय पूर्व बिना प्याज-लहसुन व कम से कम तेल तथा मसालों द्वारा राजमाह का मदरा, चने का खट्टा, रायता और माह की दाल तैयार किए हैं जो कि करीब छह माह तक खराब नहीं होते हैं। अब घुग्गर स्थित असीम एंटरप्राइजेज ने यह स्वादिष्ट डिब्बाबंद व्यंजन जिला कांगड़ा में लोगों के घरों तक पहुंचाने की तैयारी की है। एमबीए तक शिक्षित असीम

■ सीएसआईआर की बनाई धाम को असीम इंटरप्राइजेज ने मार्केट में उतारा

काफी समय तक निजी कंपनियों में काम करते रहे और अब उन्होंने अपना व्यवसाय शुरू किया है। जानकारी के अनुसार राजमाह का मदरा, चने का खट्टा, रायता और माह की दाल 425 ग्राम की डिब्बाबंद पैकिंग में उपलब्ध है और सबका दाम एक समान 130 रुपए प्रति पैक रखा गया है। असीम कहते हैं कि वह अपने ही क्षेत्र के उत्पाद को प्रोमोट करना चाहते थे और कांगड़ी धाम के माध्यम से उनको एक विकल्प मिल गया है।

दिव्य हिमाचल Wed, 05 April 2017
epaper.divyahimachal.com//c/18085701

प्रोत्साहन मिले तो फिर छा जाएगी कांगड़ा चाय

चाय बागान कम होने से घट रहा उत्पादन, अधिक खर्च और कम कीमत होने से भी उत्पादक नहीं दिखा रहे दिलचस्पी

विनोद राणा

पालमपुर (कांगड़ा)।

1895 में लंदन में कांगड़ा चाय को मिला था गोल्ड मेडल

कभी 1895 में लंदन में गोल्ड मेडल हासिल कर चुकी कांगड़ा चाय को एक बार फिर प्रोत्साहन की जरूरत है। 1905 में आए भूकंप से चाय का कारोबार कम हो गया था। लेकिन, 1983 में पालमपुर में खुले सीएसआईआर संस्थान की बदौलत 1997 में एक बार फिर से उत्पादन बढ़ गया था। लेकिन, अब फिर चाय बागान के घटते क्षेत्र और चाय बागानों में कम हो रहे रुझान को लेकर उत्पादन मात्र 9 लाख क्विटंल ही रह गया है, जिसे 25 लाख क्विंटल तक ले जाने का लक्ष्य है।

कांगड़ा चाय के घटते कारोबार का कारण चाय उगाने में बढ़ता खर्चा और कीमतों में आई कमी भी है। यह देख चाय उत्पादक भी इसकी खेती से मुख मोड़ने लगे हैं। कांगड़ा चाय का इस समय 2311 हेक्टेयर क्षेत्र है, लेकिन हकीकत में 1100 हेक्टेयर पर ही चाय की खेती की जा रही है। जबकि, कांगड़ा चाय के उत्पादक 5989 हैं। कांगड़ा चाय को मिले जीआई पेटेंट का लाभ भी इस समय नहीं मिल रहा है। आईएचबीटी चाय के उत्पादन और इसकी कीमतें बढ़ाने में कई शोध कर रहा है। आईएचबीटी ने व्हाइट टी, परपल टी, टी वाइन समेत कई वैरायटियां तैयार कर ली हैं। यही कारण है कि चाय कारोबार में किसानों के घट रहे रुझान और चाय उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए आईएचबीटी में चाय उत्पादकों को कई जानकारियां दी गईं। चाय के घटते कारोबार को बढ़ावा देने के लिए अब चाय उत्पादकों ने आईएचबीटी पर ही भरोसा जताया है। उधर, आईएचबीटी के वरिष्ठ वैज्ञानिक चाय विशेषज्ञ डॉ. आरके सूद ने कहा कि आईएचबीटी चाय पर काफी शोध कर रहा है, जिसका आने वाले दिनों में लाभ मिलेगा।